IJLRP
International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)
E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

सूफी काव्य की प्रवृत्तियाँ: पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण

सोमदत्त शर्मा
सहायक आचार्य –हिंदी
राव पीयूष सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जखराना कोटपुतली बहरोड़

सूफी प्रेमाख्यान काव्य परंपरा मध्यकालीन हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण काव्यधारा मानी जाती है। सूफी शब्द की व्युत्पत्ति पर विभिन्न विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि मदीना में मस्जिद के सामने एक 'सुफ्फा' नामक स्थान था, जहां पर फकीर और साधु बैठते थे, और उन्हें सूफी कहा जाता था। एक अन्य मत के अनुसार, 'सूफी' शब्द 'स्फ' से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है सदाचार और सद्व्यवहार के कारण अग्रिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति। तीसरे मत के अनुसार, सूफी शब्द 'सोफिया' का रूपांतरण है, जो ज्ञान प्राप्त व्यक्ति को सूचित करता है। कुछ विद्वान इसे 'सफा' शब्द से जोड़ते हैं, जिसका अर्थ है शुद्धता और पवित्रता। इसके अतिरिक्त, एक विचारधारा यह भी है कि 'सूफी' शब्द 'सूफ' (ऊन) से उत्पन्न हुआ है, क्योंकि सूफी लोग लंबी ऊनी चादर पहनते थे।

इन विभिन्न मतों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सूफी शब्द उन व्यक्तियों को संदर्भित करता है जो ऊनी कपड़े पहनते हुए साधनापूर्ण जीवन जीते थे और धार्मिकता में अग्रिम पंक्ति में खड़े होने के अधिकारी थे।

सूफी मत इस्लाम धर्म की शरीयत के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में उत्पन्न हुआ था और इसे इस्लाम का एक प्रमुख अंग माना जाता है। सूफी मत की जड़ें शामी जातियों की आदिम प्रवृत्तियों में पाई जाती हैं, जो पहले इसके विरोधी थे। शामी जातियों में विराग की भावना मसीह के अवतार के साथ जागी थी, परंतु धीरे-धीरे प्रणय-भावना इतनी प्रबल हुई कि मसीह को 'दूल्हा' और उनके भक्तों को 'दुल्हिन' कहा जाने लगा। यह माना जाता है कि सूफी मत का आरंभ आदम में बीज रूप में हुआ था, फिर नूर में अंकुरित हुआ, इब्राहिम में विकसित हुआ, मूसा में परिपक्व हुआ और मसीह में परिपाक के बाद, मुहम्मद साहब में इसका पूर्ण रूप पाया। प्रेम और संगीत के साथ-साथ सूफियों के अधिकांश लक्षण मुहम्मद साहब में स्पष्ट रूप से देखे जाते हैं।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि सूफी मत का पूर्ण विकास विभिन्न ऐतिहासिक और धार्मिक घटनाओं से प्रभावित होकर हुआ, और इसका मुख्य उद्देश्य आत्मिक शुद्धता और प्रेम की स्थापना था।

बीज – शब्दः सूफी प्रेमाख्यान, सूफी मत, स्वतन्त्र विकास, आध्यात्मिक, में परमात्मा की प्राप्तिA

शोध - सार

भारत में सूफी मत का प्रचार 12वीं शताब्दी में प्रसिद्ध सूफी अल्हुज्विरी के आगमन काल से माना जाता है। भारत में सूफी मत चितिया, कादरी, सुहरावर्दी एवं नक्ाबंदी सम्प्रदायों के रूप में प्रचलित हुआ। इन सबमें प्रसिद्ध चितिया सम्प्रदाय हुआ। ख्वाजा मुईनद्दीन इस सम्प्रदाय की सातवीं पीढ़ी में हुए जिन्होंने भारत में सूफीमत का प्रचार

International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

किया। सूफी मत पर सबसे अधिक प्रभाव भारतीय वेदांत का पड़ा, जिससे सूफी मत ने अपना स्वतन्त्र विकास किया। दूसरा प्रभाव हठयोगियों का पड़ा, जिससे सूफियों ने प्राणायाम आदि की शिक्षा प्राप्त की।

सूफी काव्य परम्परा सूफी मत पर बौद्ध धर्म और वेदान्त का गहरा प्रभाव पड़ा है। सूफी सन्तों ने 7-8वीं शताब्दी में भारत में इस्लाम का प्रचार आरम्भ कर दिया था। इन्होंने हिन्दुओं तथा मुसलमानों के मतभेदों को दूर करते हुए उनमें आपसी एकता स्थापित करने का प्रयास किया। जायसी, कुतुबन, कहरनामा, मंझन, उसमान, मुल्लादाऊद, कासिमगाह, शेख नबी आदि कवि सूफी काव्य परम्परा के प्रमुख कवि है। सूफी कवियों ने अपनी रचनाओं में भारतीय लोक कथाओं को लेकर इस्लाम व सूफी मत के मूल सिद्धान्तों का विवेचन किया है। मुल्ला दाऊद सूफी परम्परा के सबसे प्राचीन कवि है। इनकी रचना 'चन्दायन' हिन्दी का प्रथम सूफी काव्य माना जाता है। रंजन की 'प्रमवन जीव निरंजन' हिन्दी की विख्यात रचना है। कुतुबन की 'मृगावती', मंान की 'मधुमालती', उसमान की 'चित्रावली', शेख नबी की 'ज्ञानवती', कासिम ॥ह की 'हंस जवाहिर', नूर मुहम्मद की इन्द्रावती', जलालुद्दीन का 'जमाल पच्चीसी' ग्रन्थ, जटमल ने 'गोरा बादल की बात' व 'प्रमलता चौपाई' नामक दो ग्रन्थ लिखे। नसीर की 'प्रमदर्पण', प्रमी की प्रम परकास', फाजिल"॥ह की प्रम रतन' आदि उल्लेखनीय काव्य रचनाएँ हैं। जायसी इस काव्यधारा के ही नहीं अपितु हिन्दी साहित्य के महान कवि है। मलिक मोहम्मद जायसी ने शेर"गाह के शासन काल में अपनी रचनाओं का सृजन किया। ये सूफी फकीर शेख मोहिदी के शिष्य थे। जायसी का जन्म सम्वत् 1521 के आसपास और मृत्यु सम्वत् 1599 में मानी जाती है। 'पद्मावत' 'अखरावट', 'कहरनामा', 'चित्ररेखा', 'आखिरी-कलाम', 'मसलानामा' आदि जायसी की प्रमुख रचनाएँ है। 'पद्मावत' जायसी जी की कीर्ति का आधार स्तम्भ है। पद्मावत' के पूर्वार्द्ध में व्यक्ति पक्ष है परन्तु उत्तरार्द्ध में लोकपक्ष आ गया है। इनका स्थान हिन्दी के सूफी कवियों में सर्वोपरि है। कवित्व-गुण और भाषा की दृष्टि से जायसी में अन्य सूफी सन्तों से अधिक श्रेष्ठता है। जायसी ने 'पदमावत' की प्रमकथा में कल्पना के साथ ऐतिहासकता का भी मिश्रण किया है। इसमें लौकिक-प्रम के आधार पर आध्यात्मिक प्रम की व्यंजना हुई है। इनके रहस्यवाद की आधारगिला भारतीय 'वदान्त की अद्वैत भावना है'। इनका विरह वर्णन हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। 'पद्मावत' में राजा रतनसेन की विरह-द"गा। का वर्णन करके अलौकिक प्रम की पीर' का संकेत प्रस्तुत किया है। सूफी प्रम-काव्य परम्परा का पूर्ण परिपाक जायसी जी की रचनाओं में देखने को मिलता है।

सूफी काव्य परम्परा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ:

प्रबन्ध कल्पना: सूफी कवियों के ग्रन्थ अधिकतर प्रबन्ध शैली में लिखे गए थे। इनके कथानक में रमणीयता के साथ सम्बन्ध निर्वाह भी सुव्यवस्थित हुआ है। इन्होंने लोक-प्रसिद्ध कहानियों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। प्रबन्ध काव्य परम्परा अनुसार काव्य रूढ़ियों का वर्णन है। इनके वस्तु वर्णन में नदियाँ, वन, समुन्द्र व पर्वत है। वस्तु परिगणन शैली की अधिकता के कारण सूफी कवियों का वस्तु वर्णन उच्च कोटि का नहीं बन पाया जिससे इनके काव्य में नीरसता आ गई है। इनकी रचनाओं में लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की गई है। इनके कथानक में सुखान्त व दुःखान्त दोनों प्रकार की कथाएँ मिलती है। पूर्वराग, स्वपन या चित्र दर्दीन के रूप में प्रेम के संयोग व वियोग दोन्हें रूपों का वर्णन किया गया है। इनकी कहानियों में राजकुमार तथा राजकुमारी को पूर्वराग, स्वपन या चित्र दर्शन के माध्यम से प्रेम हो जाता है और इन्हें अपने प्रेम को प्राप्त करने के लिए भयंकर वन, तूफान, विषैले सांप, बल'गाली हाथी, पक्षी, राक्षस आदि बाधाओं का सामना करना पड़ता है; तत्प" चात् ये अपने प्रेम को प्राप्त करने में सफल होते हैं। इनके कथानक प्रायः एक जैसे है। कथानक में मुख्य कथा के साथ-साथ पक्षियों, देवों और अप्सराओं की कहानियाँ भी मिलती है। प्रबन्ध कल्पना इनके काव्य की प्रमुख विषता है। प्रबन्ध काव्यों में सुखान्त व दुखान्त दोनों प्रकार की कथाएं मिलती है।

मसनवी परम्परा का प्रभाव सूफी कवियों की प्रेमगाथाओं में फारसी की मसनवी पद्धति के अनुसार कथानक के आरम्भ से पूर्व ई"वर वन्दना, मुहम्मद साहब की स्तुति, तत्कालीन बाद गाह की प्रांसा तथा आत्म परिचय मिलता है। सूफी काव्यधारा के प्रमुख कवि जायसी ने अपनी रचना 'पदमावत' में सर्वप्रथम ई"वर वंदना, मुहम्मद साहब की स्तुति, गुरु वन्दना, तत्कालीन बाद ॥ह शेर शाह सूरी की प्रशंसा तथा आत्मपरिचय दिया है। भारतीय और ईरानी पद्धतियों का भी सूफी काव्य में सुन्दर मिश्रण है। सूफी कवियों की प्रेमकथाएं भारतीय चरित-काव्यों की सर्गबद्ध शैली में न होकर फारसी की मसनवियों परम्परा अनुसार है।

लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना सूफी कवियों ने धार्मिक प्रतिबन्धों के कारण ही अलौकिक प्रेम की व्यंजना लौकिक प्रेमाख्यानों की सहायता से की है। ऐतिहासिक गाथा में कल्पना का मिश्रण कर अपनी रचना में प्रस्तुत किया है। सूफी कवियों का वि" वास है कि परमात्मा एक है और हम उसी का अं◌ा है। 'आत्मा' परमात्मा का " है और यह मानव देह धारण करके प्रेम के सूत्र में परमात्मा की प्राप्ति में संलग्न होती है। जीवात्मा का परमात्मा के लिए तीव प्रेम और साधक के मार्ग की कठिनाइयों का वर्णन सूफी कवियों की प्रेमगाथाओं के अलौकिक प्रेम में चित्रित किया गया है। शैतान आत्मा-परमात्मा के मिलन में बाधा उत्पन्न करता है। इस बाधा का गुरु की सहायता से दूर करके साधक परमात्मा की प्राप्ति करता है।

"सब वहि भीतर, वह सब माही,
सबै आपु दूसर कोउ नाहिं"

चरित्रांकन : पात्रों के चरित्र एक विशेष ढाँचे में ढले हुए परम्परागत है। पात्रों के चरित्र चित्रण में विविधता न होकर बद्धमूल परम्परा का ही पालन हुआ है। सूफी काव्य में मुख्यतयः प्रेम सम्बन्धी प्रसंगों को ही चित्रित किया गया है। प्रेम के विविध प्रसंगों और व्यापारों को नायक-नायिकाओं के माध्यम से

अभिव्यक्त किया गया है। नायक का स्वरूप प्रायः पूर्व निर्धारित सा प्रतीत होता है। काल्पनिक पात्रों की सृष्टि भी की गई है परन्तु अप्राकृतिक लगती है। ऐतिहासिक पात्रों में भी कल्पना का रंग अधिक चढ़ा हुआ है जिससे वे भी कल्पित प्रतीत होते है। पात्रों में पेड़-पौध, वनस्पतियाँ, देवता, जिन्नात, असुर आदि के साथ-साथ नायक को भी चित्रित किया गया है। प्रेम के विविध अंगों का वर्णन होने के कारण इनकी रचनाओं में नायक-नायिकाओं का वर्णन लगभग एक साँचे में ढला हुआ है। प्रेम-तत्व की दृष्टि से ही पात्रों के चरित्र चित्रण को सफल कहा जा सकता है।

आचार्य डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी अनुसार "कथानक को गति देने के लिए सूफी कवियों ने प्रायः उन सभी कथानक रूढ़ियों का व्यवहार किया है जो परम्परा से भारतीय कथाओं में व्यवहृत होती रही है; जैसे चित्र-दर्शन, स्वपन द्वारा अथवा शुक-सारिका आदि द्वारा नायिका का रूप देख या सुनकर उस पर आसक्त होना, पशु-पक्षियों की बातचीत से भावी घटना का संकेत पाना, मन्दिर या चित्राला में प्रिय युगल का मिलन होना, इत्यादि। का भी चित्रित किया गया है। प्रेम के विविध अंगों का विवरण होने के कारण इनकी रचनाओं में नायक-नायिकाओं का वर्णन लगभग एक साँचे में ढला हुआ है। प्रेमत्व की दृष्टि से ही पात्रों के चरित्र चित्रण को सफल कहा जा सकता है।

लोक पक्ष का चित्रण सूफी कवियों ने हिन्दू-मुसलमानों के मतभेदों को दूर करने का प्रयत्न किया; परिणामस्वरूप हिन्दू लैला-मजनू की कथा से परिचित हो गए और मुसलमान नल-दमयन्ती की दास्तान से। इनका दृष्टिकोण समन्वयवादी था। इन कवियों ने हिन्दू घरों की प्रेम कहानियों को लेकर अपने सिद्धांतों का प्रचार किया। लोक जीवन लोक संस्कृति की झाँकियाँ प्रस्तुत करने का कार्य किया है। जीवन के सभी पक्ष यथा लोक व्यवहार, लोकोत्सव, जादू, टोने-टोटके, मन्त्र-तन्त्र, तीर्थ त्योंहार, उत्सव, आचार-विचार, रहन-सहन, अन्धवि" वास आदि की स्पष्ट झाँकी इनकी रचनाओं में दर्शनीय है। हिन्दू धर्म आर संस्कृति के विभिन्न अवयव इनके काव्य में चित्रित है। सूफी कवियों ने हिन्दुओं की कहानियाँ हिन्दुओं की बोली में ही प्रस्तुत करते हुए वहाँ के लोक जीवन के विभिन्न पक्षों का उल्लेख किया है जो उनके लोक संस्कृति के निकट होने का आभास देते है। सूफी कवियों द्वारा लोकमान्यताओं

का यथातथ्य वर्णन का लक्ष्य लोक सम्बद्ध सांस्कृतिक रूप को प्रदर्शित करना था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने कहा था "प्रेम स्वरूप ई"वर को सामने लाकर सूफी कवियों ने हिन्दू और मुसलमान दोनों को मनुष्य के सामान्य रूप में दिखाया और भेद-भाव के द"यों को हटाकर पीछे कर दिया। जायसी जी 'पदमावत' महाकाव्य के 'सिंघलद्वीप वर्णन खण्ड' में लोक संस्कृति का चित्रण करते हुए कहते हैं :-

"पैंग पैंग पर कुआं बावरी। ताजी बैठक और पांवरी ।।
और कुंड बहु ठावहिं ठाऊं। और सब तीरथ तिन्ह के नाऊं ।।
मठ मंडप चहु पास सँवारे। तपा-जपा सब आसन भारे ।।
कोई सुऋषीसुर, कोई संन्यासी, कोई रामायती बिसवासी ।
कोई ब्रहाचार पथ लागे। कोई सो दिगम्बर बिचरहि नांगे ।।
कोईसु महेसुर जंगम जती। कोई एक परखै देबी सती ।।
कोई सुरसती कोई जोगी। कोई निरास पथ बैठ बियोगी ।।
सवेरा खेवरा बानपर, सिंध, साधक, अवधूत।
आसन मारे बैठ सब, जारि आतमा भूत ।।'

प्रेम-व्यंजना: मानव जीवन में प्रेम एक व्यापक विशेष भाव है। मानव मन की कोमल-कान्त अनुभूति को ही प्रेम कहा जाता है। काव्य रचनाओं में भी 'प्रेम' एक व्यापक तत्त्व है। सूफी काव्य परम्परा में सौन्दर्य और प्रेम को जीवन का चरम लक्ष्य मानकर इन्हीं दो तत्त्वों का चित्रण किया गया है। सूफियों के अनुसार ई"वर परम सौन्दर्यमय है, ईवर प्रेम ही जीवन का सार है। मानव के प्रयत्नों का लक्ष्य इसी परम सौन्दर्य की उपलब्धि है। मानव प्रेम के बल पर दुर्लभ देवत्व प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करने में सक्षम है। प्रेम आका" से ऊंचा है। तीन लोकों और चौदह भुवनों में प्रेम ही लावण्यमयी है। प्रेम की ज्योति से विषम से विषम परिस्थितियाँ आसान व सरल लगने लगती है। प्रेम का मधु पल चन्दन के समान शीतल है। जायसी के 'पदमावत' में पदमावतो के संयोग वर्णन के अन्तर्गत नख-खि वर्णन काफी प्रभाव"गाली किया गया है तथा नागमंति के वियोग वर्णन के अन्तर्गत बारहमासा का वर्णन भी काफी सुन्दर व आकर्षक हुआ है। सूफी कवियों ने प्रेम के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है। जायसी जी का प्रेमा सूफी प्रेमत्व के अनुकूल है। यथा :

"तीन लोक चौदह भुवन सबै परै मोहि सूझि।
प्रेम छांडि किछ ओर न लीना ज्यों देखौं मन बूझि ।।
ध्रुव ते ऊँच प्रेमधु उवा। सिर दै पाउं देइ सो छुवा ।।
दुःख भीतर जो पेम मधु राखा। गंजन मरन सहै सो चाखा ।।'

प्रेम का मार्ग सहज नहीं है। यह मार्ग विभिन्न प्रकार की विपदाओं से भरा हुआ है। इस पर चलने के लिए हिम्मत व साहस तो चाहिए ही साथ ही साथ सुखों का त्याग भी करना पड़ता है। वहीं व्यक्ति इस मार्ग पर चल सकता है जो ईवर के प्रति पूर्णतय समर्पित है। प्रेम के कठिन स्वरूप पर प्रका"। डालते हुए जायसी जी कहते हैं। यथा:

"प्रेम सुनत मन भूल न राजा, कठिन प्रेम सिर देह तौ छाजा।
प्रेम फन्द जौ परा न छूटा, जीउ दीन्ह बहु फांद न टूटा।
गिर गिट छनद धरै दुःख तेतर, खिन खित रात पीत खिन सेवा ।।'

श्रृंगार रस : सूफी काव्य में श्रृंगार रस सुन्दर परिपाक हुआ है। इसके दोनों पक्ष संयोग एवं वियोग का चित्रण किया गया है। प्रेम भाव की प्रमुखता के कारण श्रृंगार रस की सृष्टि स्वतः ही हो गई है। संयोग पक्ष में उतनी प्रबलता नहीं जितनी कि वियोग वर्णन में। मानवीय भाव यथा प्रेम, ईर्ष्या द्वेष, छल-कपट आदि का प्रसंगत वर्णन हुआ है। जायसी की रचना 'पद्मावत' में नायक राजा रत्नसेन और नायिकाओं नागमती और पद्मावती की प्रणय कथा है। नागमती स्वकीया नायिका है और पद्मावती प्रारम्भ में परकीया नायिका है, तदुपरान्त स्वकीया हो जाती है। पद्मावती के प्रेमवर्णन में किसी प्रकार का बन्धन नही है। रति भाव के माध्यम से लौकिक प्रेम और संयोग श्रृंगार का चित्रण किया गया है। पद्मावती का नख-खि, श्रृंगार, हास-परिहास, रति क्रीड़ा आदि का वर्णन पद्मावत के संयोग श्रृंगार को स्प्रकार प्रस्तुत करता है। यथा :

"हुलसे नैन दरस मद माते, हुलसे अधर रंग रस राते।
हुलसा बदन ओप रबि पाई, हुलसि हिया कंचुकि न समाई।
हुलसे कुच कसनी बन्द टूटे, हुलसी भुजा वलय कर फूटे।
आजु चांद घर आवा सुरू, आजु सिंगार होई सब चूरू।
अंग अंग सब हुलसे कोई कतहुं न समाइ।
नवहिं ठाव विम्प्रेही, गइ मुरछा तन आइ।।"

सूफी काव्य के विरह वर्णन में भोग विलास की प्रधानता नहीं है। जायसी जी ने विरह वेदना का बड़ा ही व्यापक व हृदय विदारक चित्रण प्रस्तुत किया है। आचार्य शुक्ल जी जायसी के विरह-वर्णन के सम्बन्ध में लिखते हैं :-

"जायसी के विरहोद्गार अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। जायसी को हम विप्रलम्भ (वियोग) श्रृंगार का प्रधान कवि कह सकते है। जो वेदना, कोमलता, सरलता और गम्भीरता इनके वचनों में है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

डॉ० कमल कुलश्रेष्ठ जी लिखते हैं "व्यथा अपनी सारी मधुरता, विरह अपनी सारी मिठास, प्रणय अपने सारे स्थायित्व और नारी चरम भावुकता के साथ इन शब्दों में साकार होकर बोल रही है। जायसी के द्वारा वर्णित विरह-वर्णन हिन्दी साहित्य में अपना विष्टि स्थान रखता है। वेदना का जितना निरीह, निरावरण, मार्मिक, गम्भीर, निर्मल एवं पावन स्वरूप सूफी काव्य के विरह वर्णन में मिलता है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। जायसी के विरह की तीव्रता में केवल नागमती ही नहीं अपितु सारी सृष्टि विरह अग्नि में प्रज्ज्वलित होती दिखाई देती है। यथा:

"अस परजरा विरह कर गठा, मेघ साम भए धूम जो उठा।।
दाढ़ा राहु केतु गा दाधा, सूरज जरा चांद जरि आधा ।।
और सब नखत तराई जरहीं, टूटहिं लूक धरनि महं परही।।
जरै सो धरती ठावहिं ठाऊं, दहकि पलास जरै तेहि दाऊं।।10

भौतान तथा पीर: जायसी जी ने सात्विक और तामसिक दोनों प्रकार के पात्रों का चित्रण किया है। अलाउद्दीन तामसी पात्र है जो कामी और लोभी है, राघवचेतन छली और कृतघ्न है। सूफी कवि आत्मा-परमात्मा के मिलन में शैतान को बाधक मानते है। शैतान साधक के लिए पथ-पथ पर बाधाएं उत्पन्न करता है ताकि वह अपने लक्ष्य से भटके जाए शैतान साधक को विचलित कर उसे अपने लक्ष्य से, अपने पथ से दूर करने का हर सम्भव प्रयास करता है। 'राघवचेतन' शैतान रूप में राजा रत्नसेन को अपने पथ से विचलित करता है। यथा:
"राघव दूत सोइ सैतानू।

मया अलाउदी सुल्तानू।।""

शंकर मतानुसार आत्मा-परमात्मा के मिलन में माया बाधक है। माया के रूप में अलाउद्दीन को चित्रित किया गया है। शैतान से बचाने हेतु गुरु पीर की आव" यकता होती है। सूफियों ने पीर को बड़ा सम्मान दिया है। 'पद्मावत' रचना में अलाउद्दीन शैतान के रूप म उपस्थित है तो हीरामन को गुरु रूप में चित्रित किया गया है। गुरु साधक का पथ प्रास्त करता है। वह साधक के मन-मस्तिष्क को शुद्ध व पवित्र बनाएं रखने में महत्वपूर्ण योगदान देता है तथा शैतान क कुप्रभाव को खत्म कर उसे सद्मार्ग दिखाने का प्रयास करता है। यथा:

"गुरू सुआ जेहि पंथ देखावा
बिनु गुरू जगत को निरगुन पावा? ।।12

सूफी कवियों ने शैतान को माया के समान साधक को प्रेम के साधना-मार्ग से भ्रष्ट करने वाला माना है। इन कवियों का मानना है कि शैतान के द्वारा उपस्थित व्यवधानों से साधक की परीक्षा होती है। यह अग्नि परीक्षा उसके प्रेम में उज्ज्वलता व पवित्रता लाते हुए उसे और अधिक ईवर के नजदीक ले जाती है। अतः सूफियों ने शैतान को त्यागने योग्य नहीं माना, अपितु ईवर के नजदीक ले जाने वाला अप्रत्यक्ष तत्व बताया है।

नारी चित्रण एवं प्रतीकात्मकता: सूफियों ने नारी को ईवर का प्रतीक माना है। नारी के स्वकीया व परकीया दोनों रूपों का चित्रण हुआ है। भावात्मक रहस्यवाद की जैसी सृष्टि सूफी काव्य में दर्शनीय है, वैसी अन्यत्र नहीं। इनके सभी पात्र प्रतीकात्मक है। सूफियों के रहस्यवाद में अद्वैतवादी भावना आधाराला होते हुए भी हृदय की मधुर भावनाओं का सूफी काव्य में बड़ा ही महत्व है। इन्होंने जगत को सत्य मानकर रहस्यवाद की बड़ी सुन्दर तथा भावात्मक अभिव्यक्ति की है। अव्यक्त सता को प्रेम कथानकों के द्वारा व्यक्त रूप में प्रकट किया है। सूफी प्रेम काव्य में नारी वह नूर है जिसके बिना विव सूना है। साधक जगत के समस्त जड़-चेतन पदार्थों में परमात्मा स्वरूप नारी की ही छाया देखता है और समस्त प्रकृति अव्यक्त सत्ता के समागम को उत्कण्ठित दिखाई देती है। जायसी जी द्वारा वर्णित रहस्यवाद में भावुकता भी उच्च कोटि की है और रमणीय-सुंदर द्वैतवादी रहस्यवाद का चित्रण किया गया है। यथा :

"रवि ससि नखत दिपहिं ओही जोती रत्न पदारथ मानिक मोती।
जहं जहं बिहंसि सुभावति हंसी, तहं तहं छिटकि जोति परगासी ।।
पिउ हृदय महं भेंट न होई।
को रे मिलाब कहौ केहि रोई।।

भारतीय धर्म व दर्शन का प्रभाव: सूफी मत इस्लाम व अन्य धर्मो से प्रभावित है। सूफी मत का उद्भव इस्लाम से हुआ है। इनकी रचनाओं में इस्लाम व अन्य धर्मो का प्रभाव स्पष्टतय दृष्टिगोचर होता है। सूफी वैष्णव धर्म से प्रेरित होकर अहिंसावादी बन गए। सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इनका मानना है कि यह चार तत्वों के योग से निर्मित है। जायसी की रचना 'पद्मावत' में स्थान-स्थान पर प्रतिबिम्बवाद से अपना मत-साम्य दिखलाया है। पतंजलि द्वारा निरूपित योग की क्रियाओं का सूफी काव्य में हठयोगियों द्वारा ग्रहण रूप का ही अनुसरण हुआ है। जायसी जी के विचारों और सिद्धान्तों में इस्लाम और हिन्दुत्व का अद्भुत सम्मिश्रण है। अन्य सूफी कवियों की रचनाओं में भी इस्लाम और हिन्दू धर्म का अपूर्व सम्मिलन प्रस्तुत है। इनकी रचनाओं में सांस्कृतिक एकता का भी प्रतिपादन हुआ है। सूफी कवियों ने ईवर, जीव, सृष्टि, माया, शैतान, पीर आदि के सम्बन्ध में अपने दानिक विचारों को अभिव्यक्त किया है। सूफियों का ईवर प्राप्ति का एकमात्र साधन प्रेम है। इनका जीवन दर्शन ही प्रेम है। प्रेम दर्शन के मौलिक तत्व का निरूपण सूफियों ने किया है। इन्होंने ई" वर को स्त्री रूप में माना है। सूफियों ने वेदान्तियों की भांति जीव

को ब्रह्म माना है। जीव ई वर का प्रतिरूप है। इसी प्रकार सूफी कवियों की दृष्टि में सृष्टि का उपादान कारण 'रूह' है। मानव का आत्मा से जो सम्बन्ध है वही 'रूह' आत्मा का सृष्टि से। इस सृष्टि में शैतान साधक और परमात्मा के मिलन में बाधाएं उत्पन्न करता है। इस शैतान से गुरु पीर हमें बचाता है। इस प्रकार विरह की साधना में तपकर हम आत्मसाक्षत्कार करके यह अनुभव कर पाते हैं कि मैं ब्रह्म हूँ। निःसन्देह सूफी काव्य में दा''ानिक पक्ष की भी साक्त अभिव्यक्ति हुई है।

आध्यात्मिक प्रेम: सूफी कवियों में जायसी जी स्थान विशेष है। इनकी रचना 'पद्मावत' में हमें साहित्य और दर्शन का, भक्ति और नीति का, इतिहास और कल्पना का, संस्कृति और आचार का, प्रेम और गृहस्थ जीवन का चित्रण देखने को मिलता है। जायसी जी ने 'पद्मावत' में लौकिक प्रेमकथा के माध्यम से आध्यात्मिक भावना को सरलता के साथ प्रस्तुत किया है। फारसी प्रेम पद्धति के अनुसरण पर ही इनकी कथाओं में आध्यात्मिक संकेतों की भरमार मिलती है। सम्पूर्ण पात्र एवं घटनाएं प्रतीकात्मक अर्थ की ओर संकेत करती है। इन प्रतीकों की ओर जायसी ने भी 'पद्मावत' के उपसंहार के अन्तर्गत स्पष्ट किया है। यथा :

"तन चितउर मन राजा कीन्हा।
हिय सिंहल बुधि पद्मिनि चीन्हा।
गुरू सुआ जेहि पंथ देखावा, बिनु गुरू जगत को निरगुन पावा।
नागमती यह दुनिया धन्धा, बांचा सोइ एहि चित बंधा।
राघव दूत सोइ सैतानू, माया अलाउदी सुलतानू।
प्रेम कथा एहि भांति बिचाहु, बूंझि लेहु जो बूझै पारउ"14

डॉ० कमल कुलश्रेष्ठ अनसार" पद्मावत' में प्रेम की जो व्याख्या की गई है, उसमें जहां शरीर पक्ष की अवमानना कर सूक्ष्मता की ओर कवि की लेखनी चल देती है, वहां ऐसा प्रतीत होने लगता है कि मानो कवि आध्यात्मिक प्रेम की झांकिया हमें दे रहा है। 15

गहराई से सूफी काव्य का अध्ययन करे तो ऐसा लगता है जैसे ये कवि ऐसे काव्य की रचना में लीन थे जो लौकिक अर्थ के साथ अलौकिक अर्थ की भी सृष्टि कर सके। दोहरे अर्थ से युक्त काव्य को ये प्रस्तुत करना चाहते थे। 'पद्मावत' काव्य की निम्नांकित पंक्तियाँ जायसो जी के काव्य को अन्योक्ति सिद्ध करती है, यथा :

"मै एहि अरथ पण्डितन्ह बूझा। कहा कि हम किछु और न सूझा।
चौदह भुवन जो तर ऊपरहीं। ते सब मानुष के घ मांहि।
तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल बुधि पदमिनि चीन्हा।
गुरू सुआ जेहि पंथ दिखावा। बिनु गुरू जगत को निरगुन पावा।
नागमती यह दुनियां धंधा, बाँचा सोई न रगई चित बन्धा।
राघवदूत सोई सैतानू। माया अलादीन सुलतानू।
प्रेमकथा इहि भांति विचारहु। बूझि लेहु जौ बूडौ पारहु।
तुरकी अरबी हिन्दुई, भाषा जेती आहिं।
जेहि मह मारग प्रेम कर सबै सराहें ताहिं ।। 16

इन प्रतीकों के आधार पर स्फी काव्यों को आध्यात्मिक अथवा अलौकिक प्रेमगाथा कहना ही श्रेयस्कर होगा। आध्यात्मिक प्रेम की दिव्यता इतनी असीमित है कि जिसके हृदय में यह प्रेम उदित हो जाता है, उसके हृदय का समस्त अज्ञानता रूपी अंधकार नष्ट हो जाता है।

International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

रस वर्णन: भारतीय साहित्य में रसवाद अथवा आनन्दवाद को आधार स्वीकार किया गया है। भरत मुनि से लेकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तक सभी आचार्यों ने रस को सर्वोच्च स्थान दिया है। रस सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त रहता है। श्रृंगार, वीर, रौद्र और वीभत्स रस प्रमुख रस है। सूफी काव्यों की मूल भावना प्रणय है। अतः ये श्रृंगार-प्रधान रचनाएँ हैं। श्रृंगार अथवा प्रेम को सूफी कवि जीवन का सर्वोपरि तत्त्व मानते है। अतः इन काव्यों का मूल प्रेरक तो श्रृंगार रस ही है। अन्य रसों में वीर, रौद्र, करूण, वात्सल्य अद्‌भुत रसों का भी समावें। है व सफल अभिव्यक्ति है। जायसी जी की वृत्ति श्रृंगार के उपरान्त करूण रस में भी रमी है। आचार्य शुक्ल जी ने 'पद्मावत' के अन्तिम " को करूण रस से युक्त माना है। 'जोगी खण्ड' से करूण रस का उदाहरण द्दष्टव्य है। यथा :

"रांवहि रानी तजे पराना, नोचहिं बार करहिं खरिहाना।
टूटे मन नौ मोती. फूटे मन रस कांच।
लीन्ह समेटि सब आभरन, होइगा दुःख नांच।।

'पद्मावत' रचना में पद्मावती के वियोग में जब रत्नसेन जलता है उस समय विभत्स रस का चित्रण हुआ है। फारसी साहित्य का प्रभाव स्पष्ट द्दष्टिगोचर होता है। पद्मावती के लाल-लाल अंगुलियों के चित्रण में भी वीभत्स रस की झलक मिलती है। यथा:

"गिरि गिरि परै रकत के आंसू, विरह सरागन्ह भूजै मांसू।
हिया कापि जनु लीन्हेसि हाथा, रूहिर भरी अंगुरी तेहि साथा।।"

जीवन व्यापी भावों का उत्कर्ष दिखाना सूफी काव्य का उद्देय नहीं था अपितु मुख्यतः प्रेम रस व श्रृंगार रस को चित्रित करना इनका ध्येय था।

अद्वितीय सौन्दर्य: जिस प्रकार कर्ता और कर्म का अटूट सम्बन्ध होता है ठीक उसी प्रकार सौन्दर्य और प्रेम का आपसी सम्बन्ध घनिष्ठ होता है। दोनों की पूर्णता एक-दूसरे से है। जैसे लोहा चुम्बक को अपनी ओर खींचता है, उसी प्रकार सौन्दर्य प्रेम को खींचता है। सूफी कवियों ने प्रेम तत्व और उसकी सौन्दर्यमयी कल्पना को पूर्व रूप से प्रतिपादित किया है। इनका लक्ष्य लौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति करते हुए आध्यात्मिक प्रेम का निरूपण करना है। इसके लिए सूफी काव्य में राजकुमारी या नायिका के अद्वितीय सौन्दर्य की प्रांसा द्वारा राजकुमार या राजा या नायक के हृदय में प्रेम भाव को जागृत किया है।

जायसी जी ने प्रेम दर्शन और सौन्दर्य विज्ञान के मौलिक तत्व का निरूपण किया है। जायसी जी ने 'पद्मावत' में 'लौकिक प्रेम का अलौकिक प्रेम के साथ और लौकिक सौन्दर्य का अलौकिक सौन्दर्य के साथ तारतम्य स्थापित किया है। वह अद्वितीय और अनुपम है। वे पद्मावती के सौन्दर्य का वर्णन करते-करते विश्व में परमात्मा के सौन्दर्य अंकन करने लगते है। यथा:

"जेहि दिन दसन जोति निरमई।
बहुतन्ह जोति जोति ओहि भई।।
रबि ससि नखत दीन्हि ओहि जोती।
रतन पदारथ मानिक मोती ।।
जहँ जहँ बिहँसि सुभावहि हँसी।
तहँ तहँ छिटक जोति परवासी ।।19

सूफी काव्य में नायिका क सौन्दर्य को परमात्मा के सौन्दर्य का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया गया है। नायिका ई"वर का प्रतीक है। अतः नायिका का सौन्दर्य ई"वर का सौन्दर्य है।

मंडनात्मकता : आचार्य शुक्ल जी का मानना है कि कबीरदास जी ने प्रत्यक्ष जीवन की एकता के लिए उदारता से कार्य नहीं किया। कबीरदास जी के स्वर में मंडनात्मकता की कर्कता विद्यमान थी। इसी कारण से सन्तों को हिन्दू-मुस्लिम जातियों की धार्मिक एकता के प्रयासों में उतनी सफलता नहीं मिली जितनी सूफी कवियों को प्राप्त हुई। इसका कारण सन्तों की खंडनात्मकता प्रवृति थी। सन्तों ने भिन्न प्रतीत हुई परोक्ष सत्ता की एकता के लिए प्रत्यक्ष जीवन की एकता से अधिक प्रयास किया। सूफी कवियों ने किसी भी सम्प्रदाय का खंडन नहीं किया अपितु मनोवैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण कर हिन्दू-मुस्लिम जातियों की एकता का प्रयास किया, जिसमें काफी हद तक इनको सफलता भी प्राप्त हुई। आचार्य शुक्ल जी लिखते हैं- "प्रेम स्वरूप ई" वर को सामने लाकर सूफी कवियों ने हिन्दू और मुसलमानों दोनों को मनष्य के सामान्य रूप में दिखाया और भेदभाव के द"यों को हटाकर पीछे कर दिया। 20

काव्य रूप : सूफी काव्य की प्रेममूलक रचनाएं साहित्य-"शास्त्र के अनुसार महाकाव्य की कोटि में आती हैं परन्तु सूफी काव्य में भारतीय महाकाव्य की तरह सर्गो की योजना पर ध्यान न देकर विशेष वस्तु सम्बन्धी शीर्षकों की योजना की गई है। सूफी काव्य में किसी महान चरित्र की अवतारणा न होकर प्रेम तत्व का ही प्रतिपादन है। इन कवियों के ग्रन्थ अधिकतर प्रबन्ध शैली में ही लिखे गये थे। रमणीय कथानक के साथ सम्बन्ध-निर्वाह सुव्यवस्थित हुआ है। इनकी रचनाओं में भारतीय रंग चढ़ाने का प्रयत्न किया गया है। मसनवी शैली का प्रभाव इनकी रचनाओं में स्पष्टतयः दृष्टिगोचर होता है। सूफी काव्य में प्रबन्ध काव्य के प्रायः सभी तत्व पाए जाते है। प्रबन्ध काव्य सूफी काव्यधारा की प्रमुखता है, साथ ही साथ कुछ मुक्तक काव्य भी प्राप्त हुए है। यथा तथा पद्यबद्ध निबन्ध शैली को भी अपनाया गया है। मुक्तक शैली में पद, दोहे, झूलने, कुण्डलियाँ, भजन चौपाई इत्यादि छन्दों का व्यवहार हुआ है। मुक्तक शैली में लिखने वाले सर्वप्रथम अमीर खुसरो है। कथन शैली की सजीवता और भाषा की सफाई के कारण मुक्तक शैली के दोहे अत्यन्त महत्वपूर्ण व प्रभावकारी है। सूफी प्रेमाख्यान प्रबन्ध काव्य में कथा-आख्यायिका, जैन चरित काव्य एवं मसनवी की भी विषताओं का समन्वय हो गया है और यहीं सूफी काव्य की सबसे बड़ी वि"षिता है।

प्रकृति वर्णन : वैदिक युग से लेकर आज तक प्रकृति हमें भौतिक पाषण के साथ आनन्द भी देती है। यह हमारे हृदय का भावात्मक पोषण भी करती है। काव्य के अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष में प्रकृति को स्थान दिया गया है। प्रकृति से मनुष्य प्रभावित होता है। यहीं प्रभाव इनके विचारों के माध्यम से रचनाओं में अभिव्यक्त होता है। प्रकति ने मानव की सहचरी बनकर भारतीय साहित्यकारों को कल्पना की उड़ान भरने के लिए खुला आका"। प्रदान किया है। काव्य के अनुभूति पक्ष में प्रकृति के आलम्बन, उद्दीपन, रहस्यात्मक व उपदे" गात्मक रूप देखने को मिलते है। अभिव्यक्ति पक्ष में उपमान, आलंकारिक और प्रतीकात्मक रूप पाय जाते है। अनुभूति पक्ष के अन्तर्गत उद्दीपन रूप में प्रकृति हृदय के भावों को उत्तेजित करती है या उद्दीप्त करती है तो वह प्रकृति का उद्दीपन रूप होता है। उदाहरण दृष्टव्य है:

"तनजस पियर पात भा मोरा।
तेइ पर बिरह देइ झकझोरा।।''

प्रकृति का प्रतीकात्मक रूप से अभिप्रायः है कि जब प्राकृतिक पदार्थ काव्य में दूसरी वस्तुओं के संकेत के रूप में आते है तो वे प्रतीक कहलाते है। 'पद्मावत' में रत्नसेन और पदमावती के लिए सूरज, चाँद, कमल आदि के प्रतीक आये हैं। यथा :

"जबहिं सूरज कहै लागा राहू।
तबहिं कँवल मन मएउ अगाहू।। 22

प्रकृति का उपमानगत उदाहरण दृष्टव्य है :
"ओनई घटा चहूं दिसि आई,
छूटहिं बान मेघझरि लाई। 23

कला पक्ष: सूफी प्रेमाख्यानों की भाषा प्रायः अवधी है। इस पर अन्य क्षेत्रीय बोलियों का भी प्रभाव है। लोक प्रचलित मुहावरे एवं लोकोक्तियां भावाभिव्यक्ति में सक्षम है। उसमान और नसीर पर भोजपुरी का भी प्रभाव है। नूर मुहम्मद ने ब्रजभाषा को भी आव यकतानुसार प्रयुक्त किया है। जायसी की लोकप्रचलित अवधी भाषा का प्रयोग स्वाभाविक व उच्चकोटि का है। तद्भव शब्दों का प्रयोग भी सूफी काव्य में देखने को मिलता है। छन्दों का प्रयोग सीमित और अनियमित है। प्रेमाख्यानों में अपभ्रं। के चरित काव्यों के समान दोहा-चौपाई शैली को अपनाया गया है। चौपाइ की अर्द्धाली को इन्होंने पूरा छन्द माना है। इसके अतिरिक्त सोरठा, बखै, सवैया आदि छन्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है। फारसी की बैद-प्रणाली भी मुक्तक काव्यों में देखी जा सकती है। सूफी कवियों ने भारतीय क्षेत्र के उपमान ग्रहण किए है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, समासोक्ति, व्यतिरेक, अन्योक्ति आदि अलंकारों के कारण इनकी शैली में सुन्दरता व स्वाभाविकता देखने को मिलती है। अलंकारों का साद्दे"य प्रयोग सूफी काव्य में किया गया है। इन्होंने बहुधा प्रचलित परम्परा का अनुसरण किया है।
निष्कर्ष यह है कि सूफी काव्य में प्रेम तत्व ही सर्वोपरि है। सभी प्रेम कहानियों में भारतीय वातावरण बना रहा है। ऐतिहासिक और काल्पनिक प्रेम कथाओं की अपेक्षा लोकगाथाओं पर आधारित प्रेम कथाओं में लोक तत्त्व की मात्रा अधिक है। यह जाति, धर्म, वर्ण, वर्ग, सम्प्रदाय आदि भेद से परे है और इनके काव्यों में लोक मंगल की उपासना की गई है। इन रचनाओं में जहाँ एक ओर लोकरंजन है, वहां इनमें लोक मंगल का विधान है। प्रेमकाव्यों का प्रभाव भारतीय जनमानस पर जादू सा छाया बहता है। प्रेम तत्त्व का प्रभाव बाद के काव्यों में और आज तक देखा जा सकता है। प्रेम के सार्वभौम स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए प्रेम ही सूफी काव्य का संदेश एवं सार है।

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, तिलकराज. *हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास.* आर्य बुक डिपो, 30 नाईवला, करौलबाग, नई दिल्ली, पृष्ठ 5।
2. शिवकुमार, डॉ. "गोक". *हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतियाँ.* गोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, पृष्ठ 6।
3. खण्डेलवाल, डॉ. जयकृष्ण प्रसाद. *हिन्दी साहित्य की प्रवृतियाँ.* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृष्ठ 15।
4. दीक्षित, डॉ. श्यामसुंदर. *स्टैण्डर्ड प्राचीन काव्यमाधुरी.* राजप्रकाशन मन्दिर, जयपुर, पृष्ठ 3।
5. शिवकुमार, डॉ. "गोक". *हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतियाँ.* गोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, पृष्ठ 6।